**E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi**

# स्वप्नवासवदत्तम्

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

स्वप्नवासवदत्तम् छः अङ्कों का नाटक है। कविवर्य भास के रूपकों में यह श्रेष्ठ माना जाता है। भास के तेरह नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्तम्' अतिशय लोकप्रिय नाटक है। इसमें भास की नाट्य-कला अपनी पूर्णता पर पहुँच गई है। इसका अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं तथा पाश्चात्य भाषाओं में हुआ है। यह भी इसकी लोकप्रियता का ही परिचायक है। भास ने इस नाटक में घटनाओं का संयोजन इतनी सुन्दरता तथा कलात्मकता से किया है कि सर्वत्र रोचकता एवं स्वाभाविकता आ गई है। स्थान-स्थान पर उच्च भावों की अभिव्यक्ति भास की अपनी विशेषता है। पात्रों के अनुरूप भाषा-शैली तथा सरल, संक्षिप्त एवम् ओजस्वी कथोपकथन का प्रयोग कर भास ने इस नाटक को रङ्गमञ्च के सर्वथा योग्य बना दिया है। भास ने अभिनेयता को ध्यान में रख कर ही इस नाटक का निर्माण किया है। संस्कृत के अन्य नाटकों की तरह यह अतिशय कवित्वमय नहीं है, यह वस्तुतः दृश्यकाव्य है। इस नाटक में पात्रों का चरित्र-चित्रण भी स्वाभाविक ढंग से हुआ है। सभी पात्र सजीव हैं और वे अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखते हैं। सबके द्वारा आदर्श को उपस्थित किया गया है। नाटक की नायिका वासवदत्ता पति के हित की कामना से सुदीर्घ वियोग का दुःख सहन करती है और स्वयं सपत्नी-उपार्जन करती है। विलासी एवं प्रेमपरायण नायक उदयन अन्त में अपने वीरत्वपूर्ण उदात्त गुणों के कारण नायक के उच्च पद का अधिकारी बन जाता है। उपनायिका पद्मावती अपनी सरलता एवम् उदारता के कारण सबकी श्रद्धा का पात्र है। दोनों सपत्नियों का पारस्परिक सौहार्द, पति के हित के लिये वासवदत्ता का अद्भुत स्वार्थत्याग, प्रधान मन्त्री यौगन्धरायण का अनुपम स्वामिभक्ति आदि आदर्श गुण किसको प्रभावित नहीं करते? वस्तुतः इस प्रकार के पात्र संस्कृत के अन्य किसी नाटक में नहीं दीख पड़ते। यही कारण है कि यह नाटक सबकी प्रशंसा का विषय बना हुआ है। राजशेखर ने इस नाटक की प्रशंसा में ठीक

ही कहा है कि आलोचकों ने भास के नाटकों को परीक्षा के लिए आलोचना की आग में फेंका किन्तु वह आग 'स्वप्नवासवदत्तम्' को जला न सकी, अर्थात् वह नाटक सर्वथा निर्दोष निकला-

**"भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।**
**स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः"।।**

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक का नामकरण-

किसी नाटक का नामकरण उसकी प्रधान घटना अथवा प्रधान चरित्र के आधार पर किया जाता है। नाटक दो प्रकार के होते हैं घटनाप्रधान और चरित्र प्रधान। घटनाप्रधान नाटक का नाम उसकी प्रधान घटना के अनुसार रखा जाता है और चरित्रप्रधान नाटक का नाम उसके प्रधान चरित्र (पात्र) के नाम पर रखा जाता है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' घटनाप्रधान नाटक है। इसमें चार प्रमुख घटनाएँ हैं- (१) प्रथम अङ्क में ब्रह्मचारी का प्रवेश, (२) चतुर्थ अङ्क में लतामण्डप में राजा और विदुषक का वार्तालाप, (३) पञ्चम अङ्क में स्वप्नदृश्य, (४) और षष्ठ अङ्क में सब पात्रों का एकत्र मिलन। इन चारों घटनाओं में पञ्चम अङ्क का स्वप्नदृश्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। इसमें स्वप्नावस्था में राजा उदयन को रानी वासवदत्ता मिलती है। मिलन बहुत ही कलात्मक ढंग से हुआ है। इस मिलन से वासवदत्ता के चिरवियोगव्यथित हृदय को सन्तोष प्राप्त होता है और उधर राजा उदयन को भी वासवदत्ता के जीवित रहने का विश्वास हो जाता है जिससे उत्साहित होकर वे अपने शत्रु पर आक्रमण करते हैं और अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लेते हैं । शत्रु द्वारा अपहृत राज्य की प्राप्ति ही इस नाटक का उद्देश्य है। इस प्रकार स्वप्न का यह मिलन नाटकीय उद्देश्य की पूर्ति में भी सहायक होता है। नाटक के चतुर्थ अङ्क में, विवाह के बाद, एक प्रकार से यह नाटक समाप्त सा दीखता है। उसके बाद की घटनाओं के संयोजन में भी यह स्वप्न घटना सहायक होती है। वस्तुतः यह घटना नाटक का केन्द्रविन्दु है । इस घटना की कलात्मकता, प्रभावोत्पादकता तथा भावात्मकता से प्रभावित होकर ही नाटककार ने स्वप्न-मिलन के आधार पर इस नाटक का नाम 'स्वप्नवासवदत्तम्' (स्वप्ने प्राप्ता

वासवदत्ता यस्मिन् तत्) (अथवा स्वप्ने ज्ञाता वासवदत्ता-स्वप्नवासवदत्ता, ताम् अधिकृत्य कृतं नाटकम् – स्वप्नवासवदत्तम्) रखा है।

नाटक की कथावस्तु

इस नाटक में वत्सराज उदयन और अवन्तिनरेश प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता की प्रेम कथा का वर्णन है । उदयन और वासवदत्ता की यह प्रेम कथा प्राचीन काल में अत्यन्त लोकप्रिय थी। महाकवि कालिदास ने भी 'मेघदूत' में इस लोकप्रिय कथा का संकेत किया है- "प्राप्यावन्तीन दयनकथा कोविदग्रामवृद्धान्"। इसी लोकप्रिय कथा गुणाढ्य की "बृहत्कथा" में पैशाची प्राकृत में तथा बृहत्कथा के तीन संस्कृत रूपान्तरों- बृहत्कथाश्लोक संग्रह, बृहत्कथामञ्जरी तथा कथासरित्सागर में लिपिबद्ध किया गया है। भास ने प्राचीन काल में प्रचलित लोक-कथा को ही अपने नाटक का विषय बनाया है। नाटककार भास ने नाटकीय रोचकता लाने के लिये मूल कथा में कुछ परिवर्तन भी किये हैं। कथानक इस प्रकार है राजा उदयन का विवाह अवन्तिनरेश की पुत्री वासवदत्ता के साथ हो जाने पर उनकी विलासिता बढ़ गई। उन्होंने राजकीय कार्यों की उपेक्षा कर दी। परिणाम यह हुआ कि उनके शत्रु सिर उठाने लगे। मौका पाकर आरुणि ने उनके राज्य के बहुत से अंशों को अपने अधिकार में कर लिया। अपहृत राज्य की प्राप्ति के लिये मगधराज दर्शक की सहायता आवश्यक थी। यह तभी हो सकता था जबकि दर्शक की भगिनी पद्मावती से राजा उदयन का विवाह हो जाय। किन्तु वासवदत्ता के रहते उदयन दूसरा विवाह करने के लिये तैयार नहीं होते और दर्शक भी अपनी भगिनी देने के लिये सहमत नहीं होते। अतः प्रधानमन्त्री यौगन्धरायण ने अन्य मन्त्रियों के साथ परामर्श करके एक गुप्त योजना बनाई और रानी वासवदत्ता को भी उस योजना में सहयोग देने के लिये राजी कर लिया।

एक समय राजा उदयन अपने परिवार तथा मन्त्रियों के साथ शिकार खेलने के लिये मगध राज्य के समीप के वन में गये थे। वे लोग लावाणक गाँव में ठहरे हुए थे। एक दिन जब राजा शिकार खेलने के लिये बाहर गये तो पूर्व योजना के अनुसार लावाणक गाँव में आग लगा दी गई और यह अफवाह फैलाई गई कि इस अग्निकाण्ड में रानी वासवदत्ता जल कर मर गई और उसे बचाने के प्रयास में प्रधानमन्त्री यौगन्धरायण भी जल मरे। जब सन्ध्या समय राजा शिकार से लौटे तो उन्हें वासवदत्ता

और मन्त्री के मरने का हाल जानकर अत्यधिक कष्ट हुआ। वे भी उसी आग में अपने प्राणों को त्यागना चाहते थे परन्तु मन्त्रियों ने उन्हें बहुत कुछ समझाया और राजा को वहाँ से लेकर चले गये। इधर रानी वासवदत्ता और मन्त्री यौगन्धरायण गुप्त वेश में वहाँ से निकल कर घूमते-फिरते मगध की राजधानी राजगृह के समीप तपोवन में पहुँचे। वासवदत्ता अवन्तिका (अवन्ति की महिला) के वेश में थी और योगन्धरायण संन्यासी के वेश में थे।

यह नाटक के कथानक की पृष्ठभूमि है। प्रथम अङ्क की कथा इसके बाद से आरम्भ होती है। मगध राजकुमारी पद्मावती अपनी माता के दर्शन करने के लिये तपोवन में आती है। वह अपने काञ्चुकीय से घोषणा करवाती है कि आश्रमवासियों को जिस वस्तु की आवश्यकता हो आकर माँग लें। उसी समय यौगन्धरायण वासवदत्ता के साथ राजकुमारी पद्मावती के सामने उपस्थित होता है और प्रार्थना करता है कि- "यह मेरी बहन है, प्रोषित भर्तृका है, मैं इसे कुछ दिनों के लिये राजकुमारी जी के संरक्षण में रखना चाहता हूँ"। यद्यपि उसकी प्रार्थना स्वीकार करने में कठिनाई है, क्योंकि न्यास की रक्षा करना कठिन काम है, तथापि वचनवद्ध होने के कारण पद्मावती इसे स्वीकार कर लेती है। इसी समय वहाँ एक ब्रह्मचारी आता है। वह सबके सामने लावाणक ग्राम की अग्नि घटना का वर्णन करता है। ब्रह्मचारी के मुख से राजा उदयन का पत्नी-प्रेम सुनकर सभी प्रभावित हो जाते हैं। अन्त में वह ब्रह्मचारी सबसे विदा लेकर चला जाता है। यौगन्धरायण भी पद्मावती से अनुमति लेकर चला जाता है। सन्ध्या-समय पद्मावती भी सबके साथ आश्रम के भीतर चली जाती है । द्वितीय अङ्क में- पद्मावती और वासवदत्ता गेंद खेलती हुई दिखलाई पड़ती हैं। वार्तालाप के प्रसंग में पद्मावती के विवाह की चर्चा छिड़ जाती है। चेटी बतलाती है कि राजकुमारी वत्सराज उदयन के गुणों पर मुग्ध है। इसी समय धात्री आकर सूचना देती है कि "किसी कार्यवश महाराज उदयन यहाँ आये हुए हैं। उनके रूप, गुण आदि पर मुग्ध होकर महाराज दर्शक ने उनके साथ अपनी बहन पद्मावती का विवाह करने का निवेदन किया है। महाराज उदयन ने इसे स्वीकार कर लिया है"। दूसरी दासी आकर सूचना देती है कि 'महारानी का आदेश है कि आपलोग शीघ्रता करें, आज ही कौतुक-मङ्गल का शुभ नक्षत्र है'।

तृतीय अङ्क में- मगध के राजभवन में पद्मावती के विवाह की चहल पहल दीख पड़ती है। सभी प्रसन्न है। किन्तु वासवदत्ता को यह दृश्य असह्य है। वह अपना मन बहलाने के लिये प्रमदवन में आती है। उसी समय एक दासी आकर उससे माला गूथने के लिये कहती है। यह कार्य उसकी इच्छा के विपरीत है, फिर भी वह माला गूथने लगती है। वह माला में फूलों के साथ 'अविधवाकरण' नाम की जड़ी तो गूथती है किन्तु 'सपत्नी-मर्दन' नामक जड़ी नहीं गूथती। दासी के पूछने पर वह कह देती है कि पद्मावती की सौत मर चुकी है इसलिये इस जड़ी के गूथने की आवश्यकता नहीं है। इसी समय एक दूसरी दासी आकर माला ले जाती है और वासवदत्ता अपने दुःखित मन के साथ सोने चली जाती है।

चतुर्थ अङ्क में शरद् की दुपहरिया में पद्मावती वासवदत्ता और चेटी के साथ प्रमदवन में घूमने आती है। इसी समय विदूषक वसन्तक के साथ राजा उदयन भी पद्मावती को खोजते हुए प्रमदवन में आ जाते हैं। राजा को देखकर संकोचवश सभी लतामण्डप में छिप जाती हैं। राजा भी घूमते फिरते लतामण्डप के पास पहुँच जाते हैं। वे भी लतामण्डप में विश्राम करना चाहते हैं, किन्तु पद्मावती की आज्ञा से चेटी लताओं को हिला देती है जिससे भौंरे उड़ने लगते हैं। भौरों के डर से राजा और विदूषक लतामण्डप के बाहर ही एक शिलाखण्ड पर बैठकर बातें करने लगते हैं। एकान्त पाकर विदूषक राजा से पूछता है - मित्र ! आपको कौन अधिक प्रिय हैं तब की वासवदत्ता या अब की पद्मावती? राजा धर्मसंकट में पड़ जाते कुछ कहना नहीं चाहते, किन्तु विदूषक के आग्रह करने पर वे कहते हैं- 'पद्मावती अपने रूप, शील और मधुर वचनों के कारण मुझे बहुत प्रिय है किन्तु वह वासवदत्ता में लगे हुए मेरे मन को अपनी ओर नहीं कर पाती'। इस उत्तर से राजा के हृदय की विशालता को जानकर लतामण्डप में बैठी हुई पद्मावती और वासवदत्ता दोनों प्रसन्न हो जाती हैं। राजा भी विदूषक से पूछते हैं-"अब तुम बताओ, तुम्हें कौन प्रिय हैं तब की वासवदत्ता या अब की पद्मावती"? विदूषक केवल इतना ही कह कर इस विषय को टाल देना चाहता है कि "मुझे दोनों प्रिय हैं"। परन्तु राजा के आग्रह करने पर वह कहता है कि "वासवदत्ता मुझे बहुत प्रिय थीं। परन्तु पद्मावती तरुणी हैं, क्रोध एवम् अभिमान से रहित हैं मधुरभाषिणी हैं और उदार हैं। इनमें एक विशेष गुण यह है कि यह सुमधुर भोजन

लेकर मुझे खोजती रहती हैं कि आर्य वसन्तक कहाँ गए"। इस प्रकार बातचीत के प्रसंग में वासवदत्ता का स्मरण हो जाने से राजा की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। यह देखकर विदूषक मुँह धोने के लिये पानी लाने चला जाता है। अवसर देख कर वासवदत्ता पद्मावती को राजा के पास भेज देती है। तब तक विदुषक भी पानी लेकर आ जाता है। पद्मावती विदूषक से पूछती है- "आर्यपुत्र की आँखों में यह आँसू कैसे"? पहले तो विदूषक घबड़ा जाता है परन्तु सम्हल कर कहता है- "कुछ नहीं, हवा के झोंके से काश की धूल इनकी आँखों में पड़ गई जिससे आँसु आ गये। यह लीजिये, पानी से इसका मुँह धुलवा दीजिये"। पद्मावती राजा के मुँह धुलवा देती है। सामने पद्मावती को देख कर राजा चौक उठते हैं। विदूषक कुछ इशारा कर देता है। इसलिये पद्मावती के पूछने पर वे भी यही कहते हैं कि-"काश की धूल पड़ जाने से मेरी आँखों में पानी भर आया था"। चतुर विदूषक सोचता है – "कहीं बातचीत के प्रसंग में रहस्य न खुल जाय, इसलिये वह राजा से कहता है-"महाराज! राजा दर्शक अपराह्न में आपके साथ अपने मित्रों से मिलने वाले हैं। समय हो गया है। चला जाय"। यह सुनकर सब उठ कर चल देते हैं।

पञ्चम अङ्क में पद्मावती के सिर-दर्द का हाल सुनकर राजा उदयन विदूषक के साथ उसे देखने के लिये समुद्र-गृह में जाते हैं। वहाँ वे पद्मावती की सेज को खाली देखकर उसपर बैठ जाते हैं और पद्मावती की प्रतीक्षा करने लगते हैं। बैठे-बैठे उन्हें नींद आने लगती है। विदूषक उन्हें कहानी सुनाता है। वे कहानी सुनते-सुनते सो जाते हैं। अधिक ठंढक मालूम पड़ रही थी, इसलिये उन्हें ओढ़ाने के लिये विदूषक अपनी चादर लाने चला जाता है। इसी समय वासवदत्ता भी पद्मावती को देखने के लिये समुद्र-गृह में पहुँचती है। वहाँ शय्या के एक भाग में सोए हुए राजा को देखकर उसे पद्मावती का भ्रम हो जाता है। वह सोचती है शायद पद्मावती मेरे लिये ही जगह खाली छोड़कर किनारे में सोई हुई है। यह विचार कर वह भी सोने लगती है। इसी बीच राजा स्वप्न में बोल उठते हैं-"हाय वासवदत्ता! बोलती क्यों नहीं, नाराज तो नहीं हो"? राजा की आवाज पहचानकर वासवदत्ता झट उट खड़ी होती है। भावावेश में आकर वह भी राजा से बातें करने लगती है। राजा स्वप्न में ही वासवदत्ता को मनाने के लिये अपना हाथ फैलाते हैं। उनका हाथ शय्या से नीचे लटकने लगता है। वासवदत्ता सोचती है-

बहुत देर हो गई, कोई देख न ले। इसलिये वह राजा के लटकते हुए हाथ को शय्या पर रखकर झटपट वहाँ से निकल जाती है। वासवदत्ता करस्पर्श से राजा की नींद टूट जाती है।

वे 'ठहरो वासवदत्ता, ठहरो' कहते हुए वासवदत्ता के पीछे दौड़ पड़ते हैं परन्तु किवाड़ से टकरा जाने के कारण वे समझ नहीं पाते कि सचमुच वासवदत्ता को उन्होंने देखा है या धोखा हुआ है। इसी समय विदूषक वहाँ पहुँचता है। राजा उससे सारा वृत्तान्त कहते हैं। वह इसे उनका भ्रम बतलाता है। परन्तु राजा ने वासवदत्ता के मुख को स्पष्ट देखा था और उसके करस्पर्श का अनुभव अभी ताजा था, इसलिये वे इसे भ्रम नहीं मानते। उन्हें विश्वास हो जाता है कि वासवदत्ता जीवित है।

इसी समय काञ्चुकीय आकर सूचना देता है कि "आरुणि पर आक्रमण करने के लिये आपकी विशाल सेना रुमण्वान के साथ आ पहुँची है और मगध की चतुरंगिणी सेना भी तैयार है। केवल आपकी प्रतीक्षा है"। यह सुनकर राजा उदयन उठ खड़े होते हैं और जोश के साथ कहते हैं- "अब मैं उस दुष्ट आरुणि को युद्ध में अवश्य मार डालूंगा"।

षष्ठ अङ्क में राजा उदयन आरुणि पर विजय प्राप्त कर लौटते हैं। वत्सराज की प्राप्ति पर सभी प्रसन्न हैं। परन्तु उदयन की दशा विचित्र है। उन्हें वासवदत्ता की प्रिय वीणा घोषवती मिल गई है जिससे वासवदत्ता का स्मरण हो जाने के कारण उनका हृदय शोकविह्वल है। इसी समय वासवदत्ता के माता-पिता द्वारा भेजे गये वसुन्धरा नाम की धाई और रैभ्यगौत्रीय काञ्चुकीय विजय के उपलक्ष्य में राजा उदयन को बधाई देने के लिये आते हैं। राजा से मिलकर वे कुशल प्रश्न के बाद उन्हें सान्त्वना देते हुए वासवदत्ता का चित्र समर्पित करते हैं और कहते हैं – 'इस चित्र को देखकर अब आप धैर्य धारण करें'। पास बैठी हुई पद्मावती उस चित्र को देखकर चौंक उठती है। उसकी यह दशा देखकर उदयन उससे इसका कारण पूछते हैं। वह कहती है – "इस चित्र के सदृश्य ही एक स्त्री मेरे यहाँ रहती है। जब मैं कुमारी थी तभी कोई ब्राह्मण उसे 'अपनी बहन' कह कर मेरे पास धरोहर के रूप में रख गया"। राजा उसे देखना चाहते हैं। परन्तु पद्मावती कहती है- "वह प्रोषितभर्तृका है, दूसरे पुरुष को नहीं देखती, अतः आर्या वसुन्धरा मेरे साथ चलकर देख लें। इसी बीच संन्यासी वेश में यौगन्धरायण आ पहुँचता है और वह अपनी धरोहर की मांग करता है। राजा उदयन रैभ्यगौत्रीय काञ्चुकीय तथा

धात्री वसुन्धरा के साक्ष्य में उस धरोहर को लौटा देने के लिये पद्मावती से उसे लाने को कहते हैं। पद्मावती के साथ आई हुई वासवदत्ता को देखते ही धात्री वसुन्धरा चौक उठती है-"अरे! यह तो राजकुमारी वासवदत्ता ही हैं"। राजा भी वासवदत्ता को देख कर कहते हैं- "यह सचमुच वासवदत्ता ही हैं"। उधर यौगन्धरायण डांटकर कहता है-"राजन्! आप धर्मरक्षक और न्यायपालक हैं। आप मेरी बहन को बलपूर्वक नहीं रख सकते"। परन्तु उसकी आवाज राजा पहचान जाते हैं और उसे अपना यह कृत्रिम रूप दूर करने को कहते हैं। यौगन्धरायण राजा के पैरों पर पड़कर क्षमा माँगता है। वासवदत्ता भी राजा के पैरों पर पड़ कर कहती है-"आर्यपुत्र की जय हो"। पद्मावती भी वासवदत्ता के पैरों पर पड़कर क्षमा माँगती है। इस प्रकार सब एक दूसरे से मिलकर अतिशय प्रसन्न होते हैं। अन्त में राजा, यौगन्धरायण की योजना यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर तथा उसकी दूरदर्शिता पर अत्यन्त प्रसन्न होकर, उसे बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं।

स्वप्नवासवदत्तम् के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि भास की भाषा सरल और सुबोध है। प्रसाद और रम्यता गुणों ने नाटक को अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया है। नाटक में भारतीय भावों और आदर्शों का सुन्दर समन्वय मिलता है। भास मानवीय मनोवृत्तियों के वर्णन में आदर्श है। उनका मनोवैज्ञानिक विवेचन बहुत उच्चकोटि का है। प्रेम, प्रिय-वियोग, शोकानुभूति, अश्रुपात और शान्तिलाभ का सुन्दर विवेचन इस नाटक में प्राप्त होता है। इस नाटक के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि भास प्रकृति वर्णन, रस-वर्णन, मनोभाव-वर्णन एवं नाटकीय तत्त्वों के वर्णन में बहुत कुशल हैं। भास ने अन्तः प्रकृति और बाह्यप्रकृति का समन्वय भी प्रस्तुत किया है। प्रकृति-वर्णन में भास ने प्रसाद गुण का विशेषतया उपयोग किया है। सूर्यास्त का कितना सजीव चित्रण स्वप्नवासवदत्तम् में प्राप्त होता है-

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरतिं धूमो मुनिवनम्।
परिभ्रष्टो दूराद् रविरपि च संक्षिप्तकिरणो
रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।

अर्थात् पक्षिसमूह अपने घोंसलों में पहुँच गया है। मुनिगण स्नानार्थ जल में प्रविष्ट हो गए हैं। यज्ञिय अग्निजल रही है और धुँआ मुनि-वन में फैल रहा है। सूर्य अपनी किरणों को समेट कर अपने रथ को लौटा के धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जा रहा है।

वस्तुतः भास कविता कामिनी के हास हैं। नाटक में सरलता, सरसता, भाषा-सौष्ठव और सालंकारिता है। रंगमञ्च की दृष्टि, आकर्षिता की दृष्टि से, अभिनय की दृष्टि से तथा सर्वजन-मनोभिरामता की दृष्टि से यह नाटक प्रशंसनीय है।